International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 462-465

अमृतलाल नागर कृत उपन्यास 'बूँद और समुद्र' में मध्यवर्गीय चारित्रिक यथार्थ की अभिव्यक्ति

डॉ० दर्शन पाण्डेय

सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग शिवाजी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

प्रस्तावना

अमृतलाल नागर यथार्थवादी रचनाकार माने जाते हैं, वास्तव में उन्होंने प्रेमचंद की यथार्थवादी परंपरा को ही अग्रसर किया। व्यक्ति और समाज के अंतर्संबंधों का चित्रण हो अथवा मानव-मन के आंतरिक द्वंद्व एवं पीड़ा का वर्णन उन्होंने प्रेमचंद के समान या यूँ कहें कहीं ना कहीं उनसे भी आगे जाकर इन पक्षों को सार्थकता प्रदान की है। नागर जी के लगभग सभी उपन्यास परंपरागत कथानकों की लीक से अलग जान पड़ते हैं, इनमें आदर्श के स्थान पर यथार्थ का आग्रह अधिक है। जिसमें उन्होंने मध्यवर्गीय व्यक्ति और समाज की समस्याओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। स्वातंत्र्योत्तर भारतीय मध्यवर्गीय समाज के यथार्थ चित्र को अमृतलाल नागर ने 'बूँद और समुद्र' के माध्यम से उकेरा है, तत्कालीन सामाजिक जीवन की विडंबनाओं, जटिलताओं, विशृंखलताओं तथा मानवीय विवशताओं का यथार्थ अंकन इस उपन्यास में देखा जा सकता है।

'बूंद और समुद्र' अमृतलाल नागर का तीसरा उपन्यास है जो सन् 1956 में प्रकाशित हुआ, इसमें न केवल सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक समस्याओं का चित्रण मिलता है बल्कि अनेक कथाओं, घटनाओं और प्रसंगों के द्वारा विशेषकर मध्यवर्गीय समाज और चरित्र का चित्रण किया गया है। उपन्यास का कथानक लखनऊ शहर के चौक मोहल्ले का है, यह मुहल्ला एक बूँद की भांति है, जबकि भारतीय जीवन दर्शन समुद्र की भांति विशाल एवं विस्तृत है। उपन्यास का नामकरण प्रतीकात्मक है, यहाँ बूँद व्यक्ति (व्यष्टि) और समुद्र समाज (समष्टि) का प्रतीक है, दोनों के समन्वय को उपन्यास का लक्ष्य माना जा सकता है। अमृतलाल नागर ने 'बूँद और समुद्र' की सृजन प्रक्रिया पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है, "मेरे मन में सहसा यह विचार आया कि सारा हिंदुस्तान मेरे घर में मेरे चौक में रहता है।"[1] नागर जी ने इस उपन्यास की भूमिका में भी लिखा है "इस उपन्यास में मैंने अपना और आपका, अपने देश के मध्यवर्गीय नागरिक समाज का गुण-दोष भरा चित्र ज्यों का त्यों आंकने का यथामति, यथासाध्य प्रयत्न किया है, अपने और आपके चरित्रों से इन पात्रों को गढ़ा है, इस सत्य को स्वीकार करते हुए यह कहना भी अत्यावश्यक प्रतीत होता है कि पात्र या पात्री के रूप में किसी एक विशेष, अविशेष व्यक्ति का ज्यों का त्यों चित्रण मैंने नहीं किया है। किसी के प्रति असम्मान की तनिक सी भी भावना इसमें नहीं है। इसमें आयी छोटे पात्रों की कहानियाँ भी मेरे वर्षों के प्रयत्न से, जाने कहाँ-कहाँ से बटुरकर जमा हुई है, किसी एक नगर या मुहल्ले की नहीं।"[2]

इस उपन्यास के माध्यम से नागर जी ने पुरातन टूटती समाज व्यवस्था और नवीन पनपती व्यवस्था को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इस उपन्यास का कैनवस बहुत बड़ा है, आकार-प्रकार से यह रचना अत्यंत समृद्ध है, जिसमें शहरी मध्यवर्गीय समाज के परिवर्तन रूपों का सूक्ष्म अंकन उपन्यासकार ने किया है। "'बूंद और समुद्र' अपने आकार और प्रकार में ही नहीं उद्देश्य और महत्व और विषय की दृष्टि से भी नितांत नवीन है। यही वह प्रथम उपन्यास है जिसमें नागर जी ने एक विशाल कैनवास पर अनेक सामाजिक विषयों का चित्रण किया है। सामाजिक जीवन के साथ-साथ इस रचना में व्यक्ति जीवन का भी साकार रूप प्रस्तुत किया गया है।"[3] संभवतः इसी कारण से 'बूँद और समुद्र' को प्रसिद्ध आलोचक राजेंद्र यादव ने गोदान के बाद का उत्तर भारतीय जीवन का दूसरा महाकाव्य कहा है। डॉ० राम विलास शर्मा 'बूंद और समुद्र' को पुरानी समाज व्यवस्था के बनते बिगड़ते और बदलते हुए भारतीय परिवार का महाकाव्य कहा है। वहीं धर्मवीर भारती भी इस उपन्यास को सामाजिक जीवन का यथार्थ अंकन करने वाली रचना मानते हैं, उनके अनुसार "लेखक ने समाज के लगभग प्रत्येक वर्ग का चित्रण किया है और हर एक की परंपरा, संस्कार, रहन-सहन, मनोवृत्तियाँ, तहज़ीब, आदतें और बोलचाल तक का इतना सजीव और मार्मिक चित्रण हुआ कि मुझे उच्च और निम्न से निम्न वर्ग के जीवन से इतनी निकटता और घनिष्ठता स्थापित करने और उसका चित्रण करने में इतनी सफलता अन्य ने नहीं पाई है।"[4] अवध नारायण मुद्गल के अनुसार, "कविता को छोड़कर साहित्य की कोई ऐसी विधा नहीं है जो नागर जी से अछूती रही हो, व्यंग्य, कहानी, उपन्यास, नाटक, रूपक, संस्करण, यात्रावृत्त, साक्षात्कार आदि सभी में उनका महत्वपूर्ण योगदान है। नागर जी ने दो ही शब्दों में अपने आप को विभाजित किया है, एक है व्यस्त और दूसरा मस्त। लेखन ने उन्हें सदा व्यस्त रखा है और भंग भवानी ने मस्त।"[5] वास्तव में उपन्यास गद्य साहित्य कि वह विधा है जिसमें भाव एवं संवेदना के साथ भोगे हुए जीवन यथार्थ को पूरी जीवंतता तथा ब्यौरों के साथ प्रस्तुत किया जाता है। जिसमें एक विशिष्ट जीवन दर्शन तथा संस्कृति भी होती है। नागर जी के हिन्दी उपन्यास विधा को अपनी अनुभूतियों को व्यक्त करने तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया।

व्यक्ति और समाज के सामाजिक यथार्थ और उनके पारस्परिक समन्वय की समस्या 'बूँद और समुद्र' उपन्यास का मुख्य उद्देश्य कहा जा सकता है। यह वास्तविकता है कि व्यक्ति द्वारा समाज बनता है तथा समाज के माध्यम से ही व्यक्ति पोषित होता है। इस तथ्य पर नागर जी लिखते हैं, "व्यक्ति-व्यक्ति अवश्य रहे, पर उसके व्यक्तिवादी चिंतन में भी सामाजिक दृष्टिकोण का रहना अनिवार्य हो। मैं अकेला भी हूँ पर बहुजन के साथ भी हूँ; दुख- सुख, शांति-अशांति आदि व्यक्तिगत अनुभव हैं, पर ये समाज में प्रत्येक व्यक्ति के हैं। अतएव हमें यह मानना चाहिए कि समाज एक हैं- व्यक्ति तो अनेक हैं।"[6] परंतु ऐसे में जब समाज और व्यक्ति दोनों में दोष हो तो समस्या का समाधान कैसे हो इसे नहीं भूला जा सकता कि हर बूंद अर्थात व्यक्ति का महत्व है क्योंकि समुद्र अर्थात समाज कि सृष्टि एक एक बूंद से मिलकर ही संभव है इसके सदुपयोग को समझाते हुए नागर जी लिखते हैं, "कैसे हो यह सदुपयोग? कैसे यह बूँद अपने आपको महासागर अनुभव करे?..... उसके चारों ओर सागर सीमा बाँधकर लहरा रहा है और वह एक बूँद सागर से अलग रेत में घुलती चली जा रही है। और केवल उसकी यह हालत हो सो बात भी नहीं। हर व्यक्ति आमतौर पर इसी तरह अपनी बहुत छोटी-छोटी सीमाओं में रहता हुआ एक दूसरे से अलग है। बूँद और बूँद से शिकायत रखती है तो वो उससे कहीं अलगाव भी अवश्य रखती है। तब यह सागर कैसा है जिसमें हर बूँद अलग है? व्यक्ति यदि इतना ही अलग है तो समाज बंधता क्योंकर है?.....यह विरोधाभास इतना अधिक मानव समाज में आया

क्योंकर? यह विरोधाभास लेकर मानव सामूहिक जीवन चल ही कैसे सकता है?.....बूँद-बूँद का उपयोग हो; कैसे हो[7] यद्यपि इसका समाधान उपन्यास के अंत में सज्जन नामक पात्र के कथन में दृष्टिगोचर होता है, "मनुष्य का आत्मविश्वास जगना चाहिए, उसके जीवन में आस्था जगनी चाहिए। मनुष्य को दूसरे के सुख-दुख में अपना सुख-दुख मानना चाहिए। विचारों में भेद हो सकता है; विचारों के भेद से स्वस्थ द्वंद्व होता है और उससे उत्तरोत्तर उसका समन्वयात्मक विकास भी। पर शर्त यह है कि सुख-दुख में व्यक्ति का व्यक्ति से अटूट संबंध बना रहे- जैसे बूँद से बूँद जुड़ी रहती है, लहरों से लहरें। लहरों से समुद्र बनता है- इस तरह बूँद में समुद्र समाया है।" [8]

इस उपन्यास में विभिन्न चरित्रों के माध्यम से नागर जी ने उत्तर भारतीय समाज के मध्यवर्गीय स्त्री-पुरूष सम्बन्धों तथा उनकी मनःस्थितियों का अत्यंत मनोवैज्ञानिक चित्र प्रस्तुत किया है। सामाजिक यथार्थ को चित्रित करने के लिए उपन्यासकार ने इस उपन्यास के पात्रों का कथानुकूल चित्रण किया है, पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ, उनके परिवेशगत एवं परिस्थिति-जन्य वातावरण की देन है। "टोने-टोटके करने वाली जमीन भर की छू-छू ताई, पुरुष स्वभाव के कारण पति- परित्यक्ता, पर-निंदा कुशल नंदो, दबी-घुटी वासनात्मक-वृत्ति वाली और मानसिक-रति में उलझी मोहिनी, प्रेम-विवाह में बंधी तारा, स्त्री को पुरुष की मनोरंजन सामग्री-समझने वाला सामंती वर्ग का प्रतीक सज्जन, अभावों से विक्षिप्त और पत्नी की बौद्धिक निम्नावस्था से क्षुब्ध, शीला के प्रेम जाल में फँसा महिपाल शुक्ल, अत्याचारों और अनैतिक वातावरण से दूषित परिवार में पालित-पोषित विद्रोहिणी कन्या आदि सभी पात्र अपनी पारिवारिक पृष्ठभूमियों के साथ उपन्यास में अवतरित हुए हैं।"[9] उपन्यास में स्त्री चरित्र अधिक प्रभावशाली रूप में चित्रित हैं। इसी प्रकार अन्य पात्र डॉ० शीला स्विंग भी नारी अत्याचार एवं शोषण का विरोध करती दिखाई देती है। इस रूप में देखें तो नागर जी के उपन्यास में स्त्री पात्र किसी छद्म आदर्श को नहीं ओढ़े रखते, बल्कि यथार्थवादी मानसिकता का अनुकरण करते हुए रूढ़िग्रस्त परंपरागत मूल्यों को नकारते हैं। यथार्थ के प्रति आग्रह नागर जी के उपन्यासों का मूल है, स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक जीवन के यथार्थ को उसके विकृत स्वरूप को पूरी ईमानदारी और शिद्दत के साथ चित्रित करते हैं।

'ताई' इस उपन्यास की सबसे महत्वपूर्ण एवं अविस्मणीय पात्र है, नारी हृदय के विभिन्न भाव-संवेदनाएँ इस पात्र में देखी जा सकती हैं। ताई का जीवन चरित्र विकृति, विवशता तथा उदात्तता का एकत्र प्रतिबिंब है। वह सर राजा बहादुर द्वारिका प्रसाद की परित्यक्ता पत्नी है, जो उनसे अलग पूर्वजों की हवेली में रहती है। ताई का कहना है कि जब वह विवाहिता होकर आई तभी से घर में संबंधित संपन्नता का आगमन हुआ, उसके भाग्य से ही द्वारिका प्रसाद की किस्मत का सितारा चमका। वह लक्ष्मी बनकर आई, इसके बावजूद उसे परित्यक्त होना पड़ा, उसकी सौत तथा पति सुख, चैन एवं ऐश्वर्य का जीवन भोगें, यही ताई के मन की व्यथा एवं क्लेश का कारण है। उसकी सास उसे बिल्कुल पसंद नहीं करती थी, ताई की एकमात्र पुत्री भी आठ महीने की होकर मर गई, इन तमाम कारणों से ताई कटु, कुंठित, प्रतिहिंसा तथा घृणा की भावना से भर जाती है। डॉ० रामविलास शर्मा के शब्दों में, "भारतीय समाज का सारा अंधविश्वास और मनुष्य से घृणा करने वालों की सारी हिंसा मानो ताई में सिमटकर केंद्रित हो गई हो।" [10] परिवार और समाज दोनों से अपमानित एवं प्रवंचित ताई सभी को संदेह की दृष्टि से देखती है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से देखा जाए तो यह स्वाभाविक भी है। उपन्यास में ताई के संदर्भ में कई ऐसे प्रसंग आए हैं जहाँ उसे सच्चे प्रेम का आभास होता है, वहाँ उसका हृदय एकदम से पिघल जाता है। एक दो उदाहरण से इसे समझा जा सकता है। हिंसा और अंधविश्वास की भावना से भरी ताई बिल्ली के तीन बच्चों को डलिया में रखकर फेकने का विचार करती है, इसी दौरान "ठंड से सिकुड़े बंद आंखों वाले तीन बच्चे आँचल में गठरी सी बनकर उसके पेट से लग गए। तीन जीवों की प्राणशीलता उनके पेट में से कुलबुलाई, दहलीज़ तक आते-आते उन्हें कभी अपनी गोद में खेलने वाली बिटिया की सहसा याद आ गई। वे ठिठक गईं। पैर फिर हठ, झुंझलाहट और निश्चय के साथ आगे बढ़े, मगर बंद दरवाजों पर रुक गए। बेटी की याद तीव्र हो उठी थी। बिल्ली के बच्चे फिर बाहर न फेंके गए।" [11] सारे मोहल्ले की घृणा की पात्र ताई बिल्ली को जी जान से चाहने लगती है। एक अन्य प्रसंग में जब डाकू उनके मुँह में कपड़ा ठूँसकर चारपाई से बाँध जाते हैं तो उन्हें अपने चोरी गए सामान की चिंता ना होकर बिल्ली के बच्चों के भूखे होने की चिंता सताती है, सज्जन उन्हें आकर बंधन-मुक्त करता है तो उनके मुँह से 'दूध' शब्द सबसे पहले निकलता है, बिल्ली के बच्चों को दूध पिला कर ही ताई स्थिर-चित्त होती है। ताई का स्नेह सज्जन के प्रति भी अधिक है, उसे वह बेटे की तरह चाहती है। गौशाला के दालान के ऊपर का एक कमरा सज्जन को किराए पर दे देती है। प्यार से उसे 'कन्नो मल का पोता' कहकर पुकारती है। सज्जन यदि ताई की जाति की लड़की से विवाह कर ले तो उसकी पत्नी को सौ तोले सोना भी देना चाहती है। इसी प्रकार उपन्यास की एक अन्य पात्र तारा के गर्भ को गिराने के लिए पहले टोना टोटका करती है, किंतु जब तारा प्रसव-पीड़ा से कराहती है तो उसकी ममता जाग उठती है, उसे निस्सहाय जानकर तारा का प्रजनन कराती है तथा सारी ममता उसके नवजात बच्चे पर उँड़ेल देती है। उसकी छठी पूजन का कार्यक्रम बड़ी धूम-धाम से करती है। तात्पर्य यह है कि ताई के चरित्र का अमानुषिक पक्ष परिस्थितियों की उपज है। दादा-दादी के लाड़- प्यार में पली ताई अपनी उपेक्षा न सह सकी, उसके भीतर घृणा एवं जलन की भावना बढ़ती चली गई। पति परित्यक्ता ताई जादू-टोना करके दूसरों को कष्ट पहुंचाकर एक तरह से अपनी हिंसात्मक क्षुधा को शांत करती है। वास्तव में ताई का चरित्र मनोवैज्ञानिक ढंग से रचा गया है, पति से प्रतिशोध लेने के लिए उन पर 'मारण मंत्र' सिद्ध करती हैं, किन्तु बाद में उसी मंत्र को स्वयं पर चला देती हैं। वह कहती हैं, 'अब मरन किनारे किसी का बुरा ण चेतूंगी' यह कथन परंपरागत भारतीय नारी के उदात्त संस्कार और चरित्र को उद्घाटित कर देता है। इस प्रकार ताई का चरित्र कई प्रकार के अंतर्विरोधों से निर्मित हुआ है। उसमें प्रतिहिंसा एवं मानवीयता एक साथ है, जो उसके चरित्र को जीवंत और यथार्थ बनाते हैं।

'बूंद और समुद्र' की प्रमुख नारी पात्र 'वनकन्या' का चरित्रांकन पूर्ण स्वाभाविकता एवं यथार्थता के साथ हुआ है। वह साम्यवादी ना होने के बावजूद भी प्रगतिशील चेतना एवं विचारों से प्रेरित है, उसमें विद्रोह की भावना नैसर्गिक रूप से विद्यमान है। वनकन्या स्त्री-वर्ग पर होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध उठ खड़ी होती है, नारी अस्मिता तथा उसके सम्मान की प्रतिष्ठा के लिए संघर्ष करती है। वह अपने पिता के अनैतिक संबंधों के विरुद्ध आवाज उठाती है, घर का त्याग करते हुए कर्नल के यहाँ रहकर बहन और भाई का संबंध निभाती है। सामाजिक बुराइयों के खिलाफ लेख लिखती है, उसके चरित्र में स्वाभिमान, दृढ़ता तथा ओज गुण मिलता है, "वहीं पवित्र प्रेम और भारतीय नारी के सद्गुणों के समावेश के कारण उसका चरित्र रोमांटिक सा प्रतीत होता है। वह पत्नी रूप में सज्जन की हर तरह से मदद करती हुई बाबा जी की प्रेरणा से 'महिला पाठशाला' स्थापित करके समाज कार्य में लग जाती है। ..... उसकी समाज व्यवस्था के प्रति बड़ी स्पष्ट धारणाएँ हैं..... आज के समाज में जो स्त्री-पुरुष की समानता की बात कही जाती है, उसको भी कन्या एक ढोंग मात्र मानती है। उसके मत में आज की नारी गुड़िया, दासी या वेश्या के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। पूँजीपतियों के बारे में उसका स्पष्ट मत है कि पूँजीवाद को नष्ट करने के लिए स्त्री-पुरुष के आपसी संबंधों को बदलना होगा तथा व्यक्तिगत धन-संग्रह और उत्तराधिकार की भावना को नष्ट करना होगा।"[12] वस्तुतः वनकन्या के रूप में अमृतलाल नागर जी ने आधुनिक शिक्षित नारी का चित्रण किया है। जिसमें बौद्धिकता, समाज-सुधारक, विचार और भावना का सामंजस्य, घर तथा बाहर

की दुनिया में संतुलन आदि गुण मिलते हैं। उपन्यासकार ने पूरी संवेदना के साथ उसके चरित्र का यथार्थ अंकन करने का प्रयास किया है।

उपन्यास में 'महिपाल' मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी व्यक्ति की संपूर्ण सबलताओं एवं दुर्बलताओं को प्रस्तुत करने वाला चरित्र है। महिपाल के रूप में उपन्यासकार ने ऐसे ही बुद्धिजीवी रचनाकार का चित्रण किया है, जो आदर्श, मूल्यों एवं ज्ञान के द्वारा यश, प्रतिष्ठा और आत्म-संतोष प्राप्त करना चाहता हैं, परंतु जीवन में कदम-कदम पर ठोकरें मिलने पर कुंठित हो जाते हैं। ऐसे में वे दूसरे के जीवन में विष घोलते हुए स्वयं के जीवन को भी नष्ट कर लेते हैं। राजघराने में पैदा होने के कारण सामंती संस्कार महिपाल को अहंवादी बना देते हैं। आदर्श की छड़ी पकड़कर चलने वाला महिपाल पत्नी के जेवर बेंचकर भाई को पढ़ने इंग्लैंड भेजता है। बिना दहेज लिए विवाह करता है, अपनी भांजी को बेटी की तरह मानता है। इन सबके बावजूद उसके भाई जयपाल से नहीं बनती। पत्नी कल्याणी की निष्ठा से प्रभावित होने के पर भी उनका बौद्धिक अंतर उनके संबंधों में दीवार बन जाती है। वह समान बौद्धिक स्तर की महिला शीला स्विंग से प्रेम करता है, शीला भी उसके प्रति समर्पित है। अपने साले की शादी में शीला को लेकर उसका सबके सामने अपमान होता है, जिसके कारण उसका अंतर्मन आत्मग्लानि से हर उठता है। इसी के कारण वह शीला से संबंध भी तोड़ लेता है, परंतु यह संबंध विच्छेद बाह्य ही होकर रह जाता है, अंतर्मन से वह शीला से संबंध नहीं तोड़ पाता। स्पष्ट है कि महिपाल के सिद्धांत और व्यवहार में बहुत भेद मिलता है, इसी कारण वह लगातार कुंठित भी होता रहता है। अभावग्रस्त एवं कुंठा-ग्रस्त होकर अंतर्विरोधों का शिकार महिपाल ननिहाल में चोरी हुई जेवरों की थैली का भेद खुलने पर आत्महत्या कर लेता है। श्री नेमिचंद्र जैन महिपाल के आरंभिक और परवर्ती व्यक्तित्व में अंतर्संगति नहीं देखते।[13] जबकि डॉ० बिन्दु अग्रवाल का मानना है कि, "महिपाल के चरित्र के अंतर्विरोधों का चित्रण करते हुए उसके परवर्ती जीवन की परिणति अत्यंत सूक्ष्मता और यथार्थता से चित्रित की गई है। महिपाल जैसे जटिल पात्र का चरित्र-चित्रण करना अत्यंत कठिन काम था, पर नागर जी ने बड़ी बखूबी से उसका चित्रण किया। असल बात यह है कि ताई जैसी नारियाँ हर मुहल्ले में मिल जाती हैं, इसलिए उसका चित्र अनायास ही अधिक यथार्थ प्रतीत होता है, जबकि महिपाल जैसे जटिल चरित्र कम पाए जाते हैं, इसीलिए उसमें अयथार्थता दिखाई देने लगती है। पर जिस रूप में लेखक ने महिपाल का चित्रण किया है वह दुविधाग्रस्त आत्मा की दुखांत और यथार्थ गाथा है। उसके पूर्ववर्ती और परवर्ती जीवन में संगति दिखाई देती है।"[14]

उपन्यास में 'सज्जन' नामक चरित्र लेखक द्वारा आदर्श रूप में चित्रित किया गया है। सामंती परिवार में जन्मा सज्जन स्त्री को केवल मनोरंजन का साधन समझता है। आलोचक द्वय के अनुसार, "उसके जीवन में तीन तरह की औरतें आती हैं, एक से वह पैसे देकर आनंद खरीदता है, दूसरी से प्रेमोपहार में रस पाता है तीसरी वे तमाम औरतें हैं जिनसे केवल शिष्टाचार का ऊपरी नाता है। ऐसी स्थिति में जब दृढ़ एवं गौरवशाली व्यक्तित्व की धनी कन्या उसके जीवन में आती है तो वह बौखला जाता है। बचपन से संस्कारों में बसी स्त्री जाति के प्रति हीन-भावना उसे चैन नहीं लेने देती। हाँ और ना के बीच झूलता हुआ वह कभी कन्या से प्रणय निवेदन करता है तो कभी उससे दूर भागता है। अपनी अहम्-पूर्ति के लिए सज्जन सप्रयत्न भावनाओं पर अंकुश लगाता है।"[15] सज्जन के जीवन में वनकन्या का साहचर्य मिलने से उसे एक नई दिशा मिलती है, काम और विवाह संबंधी उसकी धारणाओं को परिवर्तित करने में वन कन्या का विशेष योगदान रहता है। वनकन्या उसे प्रेम और विवाह के संबंध में नई धारणाएं देती है, अनेक उतार-चढ़ावों के बाद सज्जन और वनकन्या का विवाह हो जाता है। अमृत लाल नागर ने सज्जन की मनोवृति का बड़ा सूक्ष्म और यथार्थ चित्रण किया है। नेमिचंद्र जैन सज्जन की तुलना फिल्मी नायक से करते हैं उनके अनुसार- "सज्जन बड़ा प्रतिरूपी (टिपिकल) फिल्मी नायक है जिसमें बड़ी कमजोरियाँ हैं, पर जो उन पर अंत में विजयी होता है, समस्त विघ्न-बाधाओं के बावजूद अपने शत्रुओं का नाश करता है, और नायिका को प्राप्त ही नहीं करता उसके हृदय को जीतने में भी सफल हो जाता है। उसे अपार धनी माता-पिता की एकमात्र संतान और कलाकार बनाकर तो नागर जी ने उसके फिल्मी नायक होने में बची खुची कसर भी पूरी कर दी है।"[16]

बूंद और समुद्र' उपन्यास का जीवंत एवं यथार्थ चरित्र है- कर्नल। वह इस स्वार्थपूर्ण समाज में मित्रता के संबंध को निभाने वाला व्यक्ति है। वह सज्जन और महिपाल का मित्र है, जबकि वनकन्या को बहन मानता है। सज्जन को सद्मार्ग पर लाकर वनकन्या के साथ विवाह-सूत्र में बांधने में सहायता करता है। उसका व्यक्तित्व सहज और साधारण है, उसमें किसी प्रकार की विसंगति नहीं है। मानव-प्रेम और न्याय-प्रिय होने के कारण उसे रूढ़िवादी व्यक्तियों के कोप का भाजन भी बनना पड़ता है। किंतु पूर्ण निष्ठा और दृढ़ता पड़ता से वह उन सभी का सामना करता है। वास्तव में उपन्यासकार का मन्तव्य यह है कि कर्नल जैसे निष्ठावान, धैर्यवान, निस्वार्थ व्यक्ति द्वारा रूढ़ि-ग्रस्त समाज को बदला जा सकता है, एक नवीन समाज की स्थापना हो सकती है।

उपन्यास में 'बाबा राम जी' का चरित्र हिंदी के कई आलोचकों के लिए मतभेद का प्रश्न बनकर उभरा है। राजेंद्र यादव इस पात्र को निहायत आपत्तिजनक पात्र मानते हैं, वहीं रामविलास शर्मा बाबा राम जी को पुराने संतों की परंपरा का साकार जीवित रूप मानते हैं, जबकि डॉ० रघुवंश 'बूंद और समुद्र' के पात्रों में से केवल राम जी के व्यक्तित्व को ही एक मानवीय दृष्टिकोण से देखा मानते हैं। इस विवाद पर स्वयं अमृतलाल नागर ने कहा है, "बाबा राम जी का चरित्र हमारे कई आलोचकों, बंधुओं को काल्पनिक, चमत्कारिक और फार्मूला करैक्टर लगा है। यह बात बेबुनियाद है। बाबा राम जी शत प्रतिशत जीता जागता व्यक्ति था, जिसे मैंने सज्जन, ताई, वनकन्या या महिपाल जैसे काल्पनिक चरित्रों से जोड़कर औपन्यासिक जामें में पेश भर कर दिया है। मुझे हैरत होती है कि बाबा राम जी जैसा ठेठ कर्मवादी व्यक्ति शहर के लोगों को अजब लगा।"[17] यद्यपि नागर जी के उक्त कथन के बाद सारे विवाद निर्मूल हो जाते हैं। वास्तव में उपन्यास में बाबा राम जी का साधू रूप में जो चरित्र चित्रण किया गया है, वह आज के साधुओं में दुर्लभ है। उनका तत्वज्ञान, कर्मठता, परोपकारी रूप, सेवा-भावना, दूसरों के मन को पढ़ लेने की अद्भुत क्षमता से हर कोई चमत्कारिक रूप से उनकी ओर खिंचता चला आता है।

उपन्यास के अन्य प्रमुख पात्रों को भी अमृत लाल नागर जी ने यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। कल्याणी का चरित्र परंपरागत भारतीय नारी के रूप में चित्रित है, वह महिपाल की पत्नी है, उसकी डांट और खीझ को सहन करती रहती है। अपने भाई से रूपए मंगाने पर महिपाल उसे मारता-पीटता है, इसके बावजूद पति- सेवा और उस पर अटूट विश्वास करना वह अपना पत्नी-धर्म मानती है। वह महिपाल के चरित्र पर किसी भी प्रकार से अविश्वास और संदेह नहीं करती, ना ही किसी प्रकार का मान अथवा क्रोध करती है। पति के रूठने के बावजूद उसके आधी रात के बाद वापस आने पर हलवा गर्म करके खिलाती है, यह अलग बात है कि महिपाल के ऊंचे प्रगतिशील विचारों से उसका कभी मेल नहीं हो पाता। परंपराशील संस्कारों के कारण उसमें वर्ग एवं जातिभेद भी मिलता है, यही कारण है कि वह अपनी भांजी शकुंतला का विवाह अपनी जाति के लड़के से ही करना चाहती है।

शिक्षित एवं विदुषी पात्र डॉ० शीला स्विंग स्वावलंबी स्त्री है, जिसमें पश्चिमी और भारतीय नारी के गुणों का समन्वय मिलता है। वह कष्टों, अभावों तथा संघर्षों से जूझते हुए समाज में एक प्रतिष्ठित मुकाम एवं रूतबा हासिल करती है। महिपाल से पहले भी उसका एक पुरुष से प्रेम रहा, किंतु वह उसके जीवन को सूना बनाकर चला गया। यद्यपि महिपाल के प्रति प्रेम में पूर्ण समर्पित होने के बावजूद

उसे शादी जैसे बंधन में बंधने में विश्वास नहीं है, आधुनिक लिव-इन सम्बन्धों का एक उदाहरण शीला और महिपाल के रूप में देखा जा सकता है। महिपाल के साथ अपने संबंधों को लेकर न ही उसके मन में कोई ग्लानि है ना ही उसे किसी बात का बुरा लगता है। वह अंत तक पारिवारिक बंधनों की अवहेलना करती रहती है। अंततः महिपाल की विमुखता के कारण निराश होकर अभावग्रस्त जीवन की त्रासदी को भोगने पर विवश होती है।

इन चरित्रों के अतिरिक्त उपन्यास में चित्रा, नंदो, तारा, छोटी, बड़ी, विरहेश, लाले की घरवाली, शालिग्राम जानकी शरण, द्वारकादास, मुकुंदी मल, राधेश्याम आदि मध्यवर्गीय सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करने वाले पात्रों की योजना मिलती है। चित्रा जीवन में सच्चा प्रेम न मिल पाने के कारण पुरूष की रखैल बन जाती है। पत्नी बनने की इच्छा करने वाली चित्रा को समाज वेश्या बना देता है। नंदो और विरहेश का चरित्र अतिरंजनाओं को छूता दिखाई देता है। नंदो को पति का प्रेम नहीं मिल पाता, इसलिए वह भी ताई की भाँति कुंठित हो जाती है और विवाहितों को कष्ट पहुंचाने में ही आत्म-संतुष्टि पाती है। यहाँ यह कहना ज़रूरी है कि ताई की तरह नंदो का चरित्र-चित्रण समग्रता में नहीं हुआ है, परंतु जितना और जो भी किया गया है वह यथार्थ है। विरहेश की चरित्र सृष्टि भी यथार्थ एवं वास्तविकता के धरातल पर हुई है, वह उन कवियों का प्रतिनिधित्व करता है जो तुकबंदी को ही कविता मान कर स्वयं को बड़ा साहित्यकार समझने लग जाते हैं। छत पर ताक-झाँक करते हुए बड़ी को लिखी गई प्रेम-परक कविता और उसका बेहूदा प्रदर्शन ओछापन दर्शाता है, जो उसके चरित्र को निम्न बना देता है।

समग्रतः कहें तो 'बूँद और समुद्र' उपन्यास का कथानक एवं चरित्र योजना अधिकांशतः भले ही लखनऊ के चौक मोहल्ले से संबंधित है, किंतु इसके माध्यम से नागर जी ने उपन्यास में संपूर्ण मध्यवर्गीय सामाजिक जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत कर दिया है। इसकी कथा के पात्र बहुरंगी एवं बहुरूपी हैं, जिससे समाज का व्यक्ति-चरित्र पूरी संपूर्णता से अभिव्यक्त हुआ है। उपन्यास में घटनाएँ, प्रसंग और दृश्य योजना में वैविध्य मिलता है। मध्यवर्गीय सामाजिक जीवन के विभिन्न रूप जिसमें स्त्री-पुरुष के पारस्परिक संबंधों, अनुभवों एवं पारिवारिक जीवन की घटनाएँ मुहल्ला चौक के माध्यम से नागर जी ने अतीव सजीवता एवं रोचकता के साथ प्रस्तुत की है।

संदर्भ सूची:

1. आधुनिक हिंदी उपन्यास –सं० भीष्म साहनी तथा अन्य, पृष्ठ-94
2. बूंद और समुद्र- अमृत लाल नागर (भूमिका से)
3. अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता- डॉ० अनीता रावत, पृष्ठ 19
4. सीमांत प्रहरी-अमृतलाल नागर अंक, 15 अगस्त 1966, पृष्ठ 51
5. अवध नारायण मुद्गल- अपनी बात, सारिका, अगस्त 1985
6. बूँद और समुद्र- अमृतलाल नागर, पृष्ठ- 580
7. वही, पृष्ठ- 369-70
8. वही, पृष्ठ- 583
9. उपन्यासकार अमृतलाल नागर, डॉ० दामोदर वशिष्ठ, आशा बागड़ी पृष्ठ 17-18
10. आधुनिक हिंदी उपन्यास, सं० भीष्म साहनी तथा अन्य, पृष्ठ- 182
11. बूँद और समुद्र- अमृतलाल नागर, पृष्ठ- 21
12. डॉ० श्रीमती बिंदु अग्रवाल-पत्राचार पाठ्यक्रम एवं अनुवर्ती शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली से प्रकाशित, पृष्ठ-8, सन् 1979
13. अधूरे साक्षात्कार-नेमिचंद्र जैन, पृष्ठ- 61
14. डॉ० श्रीमती बिंदु अग्रवाल-पत्राचार पाठ्यक्रम एवं अनुवर्ती शिक्षा विद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली से प्रकाशित, पृष्ठ- 5-6, सन् 1979
15. उपन्यासकार अमृतलाल नागर- डॉ० दामोदर वशिष्ठ, आशा बागड़ी, पृष्ठ - 23
16. अधूरे साक्षात्कार-नेमिचंद्र जैन, पृष्ठ- 62
17. आधुनिक हिंदी उपन्यास- सं० भीष्म साहनी और अन्य, पृष्ठ 97
18. बूंद और समुद्र- अमृतलाल नागर- किताब महल, इलाहाबाद, संस्कारण-1968
19. अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक चेतना- सिद्धि जोशी-क्लासिक पब्लिकेशन्स, जयपुर, संस्करण-1998
20. उपन्यासकार अमृतलाल नागर- डॉ० दामोदर वशिष्ठ, आशा बागड़ी, मुदित प्रकाशन, कैथल, संस्करण, 1975
21. आस्था के प्रहरी- डॉ० सत्यपाल चुघ- इकाई प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण, 1970
22. अमृत लाल नागर भारतीय उपन्यासकार – डॉ० पुष्पा बंसल, दिनमान प्रकाशन, संस्करण, 1987
23. अमृतलाल नागर के उपन्यासों में आधुनिकता- डॉ० अनीता रावत, चंद्रलोक प्रकाशन, कानपुर, संस्करण-1998